

.. shrii hanumaan chaaliisaa ..

.. श्री हनुमान् चालीसा ..

.. दोहा ..

श्रीगुरु चरन सरोज २४
निज मनु मुकुट सुधारि .
बरनौर्ते रथुबर विमल जसु
जो दायुकु फल चारि ..

बुद्धिहीन तनु जानिके
सुमिरौ पवनकुमारि .
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि
हरहु कलेस भिकारि ..

.. औपाई ..

जय हनुमान शान गुन सागर .
जय कपीस निहुं लोक उजागर ..

राम दृत अतुलित बल धामा .
अंजनिपुत्र पवनसुत नामा ..

महाबीर विक्रम वज्रंगी .
कुमति निवार सुमति के संगी ..

कुचन वरन विराज सुबेसा .
कानन कुंडल कुंचित केसा ..

हाथ बज औ धजा विराजे .
काँधे मूँज जनेओ साजे ..

संकर सुवन केसरीनंदन .
तेज पताप महा जग बंदन ..

विद्यावान गुनी अति आतुर .
राम काज करिबे को आतुर ..

प्रभु अरित्र सुनिबे को रसिया .
राम लखन सीता मन बसिया ..

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा .
बिकट रूप धरि लंक जरावा ..

भीम रूप धरि असुर सँहारे .
रामचंद्र के काज सँवारे ..

लाय सज्जवन लखन जियाये .
श्रीरथुबीर इरषि उर लाये ..

रथुपति कीन्ही बहुत बडाई .
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ..

सहस बदन तुम्हरो जस गावै .
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ..

सनकादिक बह्मादि मुनीसा .
नारद सारद सहित अहीसा ..

जम कुबेर दिग्पाल जहाँ ते .
कबि डोबिद कहि सुके कहाँ ते ..

तुम उपकार सुअवहि कीन्हा .
राम मिलाय राज पद दीन्हा ..

तुम्हरो मंत्र विभीषण माना .
लकेस्वर भम्भे सब जग जाना ..

जुग सहस्र जोजन पर भानू .
लीत्यो ताहि मधुर फल जानू ..

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहि .
जलधि लाँघि गये अचरज नाहि ..

दुर्गम काज जगत के जेते .
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ..

राम दुआरे तुम रभवारे .
होत न आशा बिनु पैसारे ..

सब सुख लहै तुम्हारी सरना .
तुम रथिक काहू को डर ना ..

आपन तेज सम्हारो आपै .

तीनों लोक हाँक तें काँपै ..

भूत पिसाच निकट नहिं आवै .
महाबीर जब नाम सुनावै ..

नासे रोग हरे सब पीरा .
जपत निरंतर हनुमत बीरा ..

संकट तें हनुमान छुड़ावै .
मन कम बचन ध्यान जो लावै ..

सब पर राम तपस्थी राजा .
तिन के काज सकल तुम साजा ..

और मनोरथ जो कोई लावै .
सोई अमित ज्ञान फल पावै ..

चारों जुग परताप तुम्हारा .
है परसिद्ध जगत् उज्जियारा ..

साधु संत के तुम रभवारे .
असुर निकंदन राम दुलारे ..

अष्ट सिद्धि नो निधि के दाता .
अस बर दीन जानकी माता ..

राम रसायन तुम्हरे पासा .
सदा रहो रघुपति के दासा ..

तुम्हरे भजन राम को पावै .
जन्म जन्म के दुर्ब विसरावै ..

अंत काल रघुबर पुर जाई .
जहाँ जम इरिमक्न कहाई ..

और देवता चिन न धरैह .
हनुमत सेई सर्व सुख करैह ..

संकट कटे भिटै सब पीरा ..

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ..

जै जै जै हनुमान गोसाई .
दृपा करहु गुरु देव की नाई ..

जो सत बार पाठ कर कोई .
धूटहि बंदि महा सुख होई ..

जो यह पढ़े हनुमान चलीसा .
होय सिद्धि साखी गौरीसा ..

तुलसीदास सदा हरि चेरा .
कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ..

.. दोहा ..

पवनतनय संकट इरन
मंगल मूरति दृप .

राम लभन सीता सहित
हृदय बसहु सुर भूप ..

.. आरती ..

मंगल मूरती मारुत नंदन
सकल अमंगल मूल निकंदन
पवनतनय संतन हितकारी
हृदय बिराजत अवध बिहारी
मातु पिता गुरु गणपति सारद
शिव समेठ शंभू शुक नारद
चरन कमल बिन्धौ सब काहु
देहु रामपद नेहु निबाहु
जै जै जै हनुमान गोसाई
दृपा करहु गुरु देव की नाई
बंधन राम लभन वैदेही
यह तुलसी के परम सनेही
.. सियावर रामचंद्रजु की जय ..